भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण का महत्व

डॉ. संजय खरे
सह प्राध्यापक - समाजशास्त्र
शासकीय स्वशासी उत्कृष्टता स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

पर्यावरण शब्द एवं उसका उसका अर्थ अत्यन्त व्यापक हैं, जिसमें सारा ब्रह्माण्ड ही समा सकता है। परि- अर्थात् हमारे चारों ओर का, आवरण-अथात् ढकना ही पर्यावरण हैं। हम सभी एवं हमारा यह संसार- आकाश वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि (सूर्य), तथा वन, वृक्ष, नदी, पहाड़, समुद्र एवं पशु-पक्षियों आदि से आवृत है। उपर्युक्त समस्त तत्वों तथा पदाथों का समग्र रूप अथवा समुदित रूप जो पर्यावरण है, उसी में सब पैदा होते हैं, जीवित रहते हैं, साँस लेते हैं, फलते-फूलते हैं और अपने समस्त कार्यकलाप करते हैं। अतः अपने और अपने समस्त समाज के लिये पर्यावरण का संरक्षण व पोषण नितान्त आवश्यक है।

वर्तमान समय में मनुष्य की अति दोहन क्रियाओं के कारण पर्यावरण प्रदूषित होकर मनुष्यों के लिये अस्वास्थ्यकर हो गया हैं। आज न शुद्ध वायु है, न शुद्ध जल, न शुद्ध खाद्य, तथा न शांत वातावरण। कुल मिलाकर मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये पर्यावरण में हानिकर तत्वों की मात्रा निर्धारित स्तर से अधिक हो गयी हैं। जो मनुष्यों के लिये जीवन दायिनी न होकर मृत्यु दायिनी हो गया हैं, जिसने कई खतरनाक बीमारियों (जैसे कैंसर, अस्थमा) को जन्म दिया हैं।

बढ़ती हुई जनसंख्या उद्योगीकरण और भौतिक आवश्यकताओं ने हमारी प्राकृतिक संपदा का मनमाने तरीके से दोहन किया हैं, जिससे गंभीर परिस्थितकीय असंतुलन एवं पर्यावरण प्रदूषण में लगातार वृद्धि हो रही हैं। इसे नियत्रित करने के लिये समाज के हर वर्ग को प्रदूषण के खतरों से सचेत करना और उन्हें पर्यावरण संतुलन और इसके नियंत्रण व संरक्षण में महिलाओं की रूचि को विशेष रूप से जाग्रत करना बहुत आवश्यक हैं ताकि प्राकृतिक संसाधनो का विवेकपूर्ण उपयोग करके उसके परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वस्थ व सदृढ़ जीवन शैली को प्राप्त कर सकें।

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल से ही प्रकृति और पर्यावरण को विशेष महत्व दिया गया है इतना ही नहीं वेदों में तो इसे ईश्वर के समान स्थान दिया गया है। परम्परागत जीवन पद्धति में यह व्यवस्था थी कि जितना हम प्रकृति से लेते थे उससे कहीं अधिक अपने श्रम से देने की कोशिश की जाती थी। ऋषि मुनियों द्वारा होम, यज्ञ आदि किये जाते थे, जिससे वातावरण के स्वच्छ होने के साथ वृक्षों के विकास और बढ़ोत्तरी के लिये भरपूर कार्बनडाई ऑक्साइड मिल सके।

''पर्यावरण मानव का चिर-सहचर रहा है'' अन्य जीव जंतुओं की तरह मानव ने भी प्रकृति की गोद में पलकर ही ज्ञान-विज्ञान की यात्रायें की हैं। यदि वैदिक साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन करें तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि जीवन समुदाय यदि अपना संरक्षण चाहता है तो उसे प्रकृति को संरक्षित करना होगा - ''रक्षायै प्रकृति पातु लोकः।''

ऋग्वेद के मंत्रों में ऐसे निश्चित संकेत हैं कि जब प्रकृति चक्र असंतुलित होता था तभी देवासुर संग्राम होते थे। पुराणों में ईश्वर के अवतारों के उद्देश्यों में यह भी निरूपित किया गया है कि प्रकृति चक्र को नियमित और संतुलित करने के लिये ही भगवान अवतार लेते हैं इस संदर्भ में श्रीकृष्णावतार के कुछ प्रसंग तो इतने जीवंत हैं कि वे समकालीन पर्यावरण की समस्याओं को भी रेखांकित करते हैं। श्रीकृष्ण ने यमुना जल में निवास करने वाले कालिया नाग का दमन इसलिए किया था, क्योंकि कालिया नाग ने यमुना के जल को अपने विष से दूषित कर दिया था। श्रीकृष्ण के लीला-चरित्र में गोवर्धन पूजा भी पर्यावरण से ही संबंधित है। मिथ्या और अहंकारी देवी-देवताओं की पूजा की अपेक्षा उस पर्वत की पूजा अधिक वांछनीय है जिससे मनुष्यों को आजीविका के साधन मिलते हैं, पशु-पक्षियों का पोषण होता है। इस तरह के और भी प्रसंग हो सकते हैं। इस सृष्टि में मनुष्य विधाता की निर्माण कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है किंतु दुर्भाग्य है कि आज का मानव प्रकृति का दोहन अपने स्वार्थ के कारण करना चाहता है। आज प्रकृति प्रांगण में मानव द्वारा ध्वंस-लीला जारी है मनमाने ढंग से प्रकृति के प्रदूषण से निश्चित रूप से अवश्यंभावी विनाश के संकेत मिलते हैं।

ईश्वर ने सर्वप्रथम सृष्टि की रचना की, प्रकृति को इस प्रकार सजाया संवारा कि मनुष्य के पैदा होने से पूर्व उसके लिये जीवनदायी उपहार पर्याप्त मात्र में प्राकृतिक रूप से मौजूद रहे। प्रकृति द्वारा प्रदत्त अनमोल उपहारों में हमें पेड़-पौधे, नदियाँ, पर्वत, सुरम्य झीले और अपना भरण पोषण करने के लिय असीमित उपजाऊ भूमि प्रदान की गई। हमारे निर्माणकर्त्ता ने हमारे लिये सभी सुविधाओं के इंतजाम हमारे जन्म से पूर्व ही कर दिये थे ताकि हमें पेड़-पौधों से शुद्ध हवा प्राप्त हो सके, नदियाँ हमें अमृत तुल्य जल पिला सकें, पर्वत हमारी रक्षा में प्रहरी की तरह तैनात रहें, झीलों की सैर हमें परम आनंद दे सकें। प्रकृति द्वारा प्रदत्त इन अनमोल उपहारों का संयोजन शुद्ध और स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण करता है। लेकिन संसाधनों के उपयोग को लेकर बढ़ता असंतुलन ही पर्यावरण के संकट के रूप में उभर रहा है।

जो पर्यावरण हमें सदियों पहले सुकून भरी जिंदगी दे रहा था उसे हमने अपने स्वार्थ की वजह से दूषित पर्यावरण में परिवर्तित कर डाला है। अपने स्वार्थों के कारण हमने न केवल नदियों के प्रवाह के साथ छेड़छाड़ की अपितु कृषि योग्य भूमि पर बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी कर भरण-पोषण का स्रोत बर्बाद कर दिया और यदि इन सब के लिये मानव वर्ग उत्तरदायी हो तो इसमें कदापि संशय नहीं है। कि हमने पर्यावरण को प्रदूषित करके मानवीय जीवन हेतु समस्यायों का अंबार स्वयं लगाया है।

समाज के अस्तित्व को खतरा

हाल ही के दशकों में जिस प्रकार तकनीकी परिवर्तन हुये हैं उसने भोग विलास की तमाम वस्तुओं को जन्म दिया है जो क्षणिक आनंद तो देती हैं लेकिन लंबे समय के लिये गले की फाँस बन जाती है। मौसम में हो रहा असंतुलन इस बात की गवाही देता है कि पर्यावरण पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। पृथ्वी का रक्षा कवच कहे जाने वाले ओजोन परत में छेद हो चुका है। ओजोन ऑक्सीजन का शुद्ध रूप है जिसकी परत मात्र 8 किलोमीटर की है ओजोन परत का इसी प्रकार क्षय होता रहा और प्रदूषण का प्रभाव वायुमंडल पर पड़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं है जब मानव कड़ी एवं ज्वलनशील धूप से तड़प-तड़प कर मरेगा। प्रदूषण के प्रकारों में भेद करना बड़ा मुश्किल है पर कुछ मुख्य प्रदूषण हैं - वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और रेडियोधर्मी, प्रदूषण वायु के बिना मानव जीवन की कल्पना असंभव है प्रत्येक व्यक्ति 24 घंटे में 22 हजार बार साँस लेता है और 35 पौंड वायु अपने फेफड़ों में भरता है। वायु प्रदूषण मुख्यतः सल्फर डाइ आक्साईड,

हाइड्रोकार्बन, कार्बन मोनो आक्साईड आदि के कारण होता है। ये कारक आग, धूल, कारखानों, वाहन, बिजली ताप घर, परमाणु संयंत्र, उर्वरक कीटनाशक, नाभिकीय विस्फोट से निकलते हैं और हवा के साथ मिलकर शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। वह रसायन हमारे शरीर की कार्य क्षमता को धीरे-धीरे प्रभावित कर नगण्य कर देते हैं वायु प्रदूषण के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों का जन्म होता हे। इस प्रदूषण से व्यक्तियों को गंभीर श्वाँस, दमा आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। वाहनों से निकलने वाली गैसों में 45 प्रतिशत कार्बन मोनो आक्साईड की मात्रा होती है जो रक्त में घुलकर ऑक्सीजन की क्षमता कम कर देती है।

वायु प्रदूषण के प्रभाव के फलस्वरूप वर्षा का जल अम्लीय होकर गिरने लगता है इस अम्ल वर्षा के कारण जमीन की मिट्टी में अम्लीयता बढ़ जाती है और उसकी उपजाऊ क्षमता घट जाती है। आज देश के अनेक शहर इस अम्लीय वर्षा से प्रभावित हैं। मथुरा में स्थित खनिज तेल रिफाइनरी के कारण वायुमंडल में बढ़ती नाइट्रस आक्साईड के कारण होने वाली तेजाबी वर्षा में आगरा के विश्व प्रसिद्ध ताजमहल के क्षय का खतरा पैदा हो गया है। वर्तमान समय में मानव की भोगविलासिता एवं स्वार्थी संस्कृति के अनुसंरण के कारण कई प्रदूषण समाज के सामने उसके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं।

अतः संपूर्ण समाज का यह दायित्व है कि पर्यावरण को अगर प्रदूषण से बचाना है तो सबसे पहले वृक्षों के संरक्षण पर बल देना होगा साथ ही प्रदूषण फैलाने वाली औद्योगिक इकाइयों को बंद करना होगा। एयर कंडीशनर जो गर्मी में आराम तो देता है लेकिन पर्यावरण को सबसे ज्यादा दूषित करता है। पर्यावरण संरक्षण के लिये कारगर रणनीति बनानी होगी लोगों में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ वन संरक्षण व प्रदूषण रोकने हेतु प्रभावी कानूनों का कड़ाई से पालन कर जीवन को सुरक्षित करना होगा।

सन्दर्भ

गुर्जर, राजकुमार : पर्यावरणीय समस्यायें, पोइन्टर पब्लिशर्स आगरा, 2000
प्रसाद, शुकदेव : 'पर्यावरण और हम' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1998
खंडेला, मानचंद : 'पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक दायित्व' पोइन्टर पब्लिशर्स, जबलपुर, 2008
रचना : जनवरी 2005